कोचीन सीमाशुल्क समाचार पत्रिका
COCHIN CUSTOMS NEWS LETTER

श्री पुल्लेला नागेश्वर राव
मुख्य-आयुक्त

श्री सुमित कुमार,
आयुक्त

सम्पादक मण्डल
सुमित कुमार, भा. रा. से. -सीमाशुल्क आयुक्त
एस अनिल कुमार , भा. रा. से. - अपर सीमाशुल्क आयुक्त
श्री वी ए मोइदीन नैना, भा. रा. से. - सहायक सीमाशुल्क आयुक्त
रितेश कुमार सिंह - निवारक अधिकारी
परामर्शदाता
श्री पी टी चाको -उप निदेशक, राजभाषा (सेवानिवृत)

अंक -1 जून, 2018

संपादकीय

सीमाशुल्क गृह की डिजिटल मासिक पत्रिका की पहली प्रति आपके समक्ष है। डिजिटल दुनिया में पत्रिका प्रकाशित करने का हमारा यह नूतन प्रयास है। इस डिजिटल पत्रिका का उद्देश्य सीमाशुल्क गृह में हो रही विभिन्न कार्यकलापों के बारे में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ साथ हमसे जुडे आयातकों, निर्यातकों, सीमाशुल्क ब्रोकरों और आम व्यापारियों को अवगत कराना है, जो उनसे न जुड़े कई गतिविधियों से अनभिज्ञ रहते हैं। इसके अलावा इस आयुक्तालय में कार्यरत अधिकारियों की सृजनता और क्रियात्मकता को बढ़ावा देना और उनको मुख्य धारा के साथ साथ कला और साहित्य से जोड़े रखना भी हमारा ध्येय है।

हाल ही में कोचीन के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर रु. 10.86 करोड़ से अधिक की विदेशी मुद्रा और कई किलो सोना आदि की तस्करी का पकड़ना कर्तव्य के प्रति हमारे अधिकारियों की सजगता को दर्शाता है। इससे जुड़े सभी अधिकारी तारीफ के पात्र हैं।

पिछले वित्त वर्ष के दौरान कोचीन के हवाई अड्डे पर तैनात कर्तव्यनिष्ठ अधिकारियों ने विदेशी मुद्रा, वाणिज्यिक सामान के अलावा लगभग 87 किलोग्राम सोना जब्त किया और 254 आपराधिक मामले भी दर्ज किए। वहाँ तैनात अधिकारियों ने कुल 15,125 उड़ानों और 23,91,497 यात्रियों को प्रक्रिया के तहत निपटाया । जब्त सोने की कीमत लगभग 23 करोड़ रुपये आँका गया है।

हमारे अधिकारी तस्करी को रोकने के साथ साथ अन्य सामुदायिक और सामाजिक हित के कार्यों जैसे पर्यावरण, स्वछता और अन्य कार्यक्रमों में भी भाग लेते है। आयुक्तालय में योग दिवस, स्वच्छता दिवस, और अन्य कार्यकलाप भी आयोजित किए जाते हैं।

यह पत्रिका निरंतर प्रकाशित होते रहने के लिए सभी अधिकारियों का सहयोग अनिवार्य है। सभी सृजनशील और कुशल अधिकारियों से अनुरोध है कि आपका सहायक हस्त हमारी ओर बढ़ाएँ, ताकि इसकी निरंतरता बनी रहे।

यह पत्रिका आपकी अपनी है, इसकी साज-सज्जा में सुधार के लिए आप क्रियात्मक सुझाव और सहयोग प्रदान करें।

शुभ कामनाओं सहित- आपका

सुमित कुमार, भा रा से
आयुक्त

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा सीमाशुल्क आयुक्तालय का निरीक्षण

सांसद श्री हुक्म देव नारायण के नेतृत्व में 4 संसद सदस्य शामिल माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति ने 26 मई, 2018 को सीमाशुल्क आयुक्तालय, कोचीन में हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में निरीक्षण किया। समिति ने इस दौरा कार्यक्रम के दौरान कोचीन स्थित अन्य तीन और कार्यालयों का भी निरीक्षण किया।

यह विदित है कि सीमाशुल्क आयुक्तालय सीमाशुल्क से संबन्धित अपने दायित्वों के साथ साथ भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में भी उतने ही प्रयासरत है। यह आयुक्तालय राजभाषा अधिनियम,1963 की धारा 3(3) का पालन में काफी सजग है और नियमों और विनियमों के पालन में भी काफी सावधानी बरतते हैं।

इस समय आयुक्तालय राजभाषा से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों कमी से जूझ रही है। संसदीय राजभाषा समिति ने वित्त मंत्रालय को निर्देश दिया है कि तुरंत इस आयुक्तालय में अधिकारियों की नियुक्ति करें।

निरीक्षण के दौरान माननीय सांसदों ने कई सुझाव दिये, जिस पर अमल की जा रही है। आयुक्तालाय आने वाले दिनों में राजभाषा के प्रयोग को यथा संभव बढ़ाने पर ज़ोर दे रही है। और भविष्य के प्रति आशान्वित है।

संसदीय राजभाषा समिति से जुड़े प्रोटोकोल का कार्य सीमाशुल्क की ज़िम्मेदारी थी और सभी अधिकारियों ने उस कार्य को बखूबी निभाया। वे सभी अधिकारी सराहना के पात्र है। आयुक्तालय ने अन्य विभागों के साथ संपर्क का कार्य भी बड़ी ही कुशलता से पूरा किया।

विश्व पर्यावरण दिवस

सीमाशुल्क गृह के अधिकारियों एवं उनके बच्चों ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सीमाशुल्क आवासीय परिसर में वृक्षारोपण किया। इसी अवसर पर श्री दास श्रीधरन, जोकि रासा गुरुकुल के संस्थापक हैं - को आमंत्रित किया गया और उन्होने अधिकारियों को पर्यावरण संरक्षण में योगदान के लिए प्रेरित किया: झलकियाँ ....

PLOGGLING

In connection with the awareness program for World Environment Day celebration, staff of this Custom House, conducted "Plogging" event, wherein fun of morning walk/jog is combined with picking up scattered plastic waste for disposal. Glimpses:::

FOOTBALL FEVER

Celebrating the spirit of oneness in sports, staff members of Cochin Customs organized a program "Football Fever" with full fervor. Glimpses:::

The Trophies

The Stars

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

योग के महत्व को लोकप्रिय बनाने की दिशा में सीमाशुल्क गृह, कोचीन में भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पूरे हर्षोल्लाश से मनाया गया। इस अवसर पर योगाचार्य श्री बालाकृष्णन एवं श्री येसुदास एंटनी ने अपने साथियों के साथ उपस्थित होकर मार्गदर्शन किया। झलकियाँ :::

योग दिवस का उदघाटन करते हुए सीमाशुल्क आयुक्त

योगाभ्यास के लिए उपस्थित अधिकारीगण

CLEANLINESS DRIVE BY STAFF MEMBERS

Under the leadership of **Shri Anukumar N.,** Launch Mechanic, staff members of this Custom House undertook comprehensive cleaning drives in Customs Quarters premises. Some fruits of their efforts:

हिमालय की गोद में - लद्दाख का सफरनामा

रणवीर बोस
सहायक सीमाशुल्क आयुक्त

" किसी मोड़ पर मुड़ कर आईना दिखाए जब जिंदगी
हो ऐतबार कि काबिल-ए-तारीफ़ हो तस्वीर-ए- जिंदगी
हर सूरत-ए- हाल में एक मिसाल हो जिंदगी
हर बंधन से परे, एक हसीन पैगाम हो जिंदगी ।'

रोमांच और दीवानगी की इस प्यास ने मनुष्य को सदियों से नए-नए उद्यम और करतब करने की प्रेरणा दी है। ऐसा ही एक उद्यम है साहसिक पर्यटन या Adventure Tourism. साधारण सैर सपाटे के साथ थोड़ा शारीरिक श्रम, थोडी प्राकृतिक निकटता, थोड़ी अतिशयता और थोड़ा साहस मिल जाए, तो इसे हम साहसिक पर्यटन कह सकते हैं।

भारत के उत्तरी भाग में स्थित लद्दाख क्षेत्र आज साहसिक पर्यटन के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। यह जम्मू व कश्मीर राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है और तिब्बतीय पठार का पश्चिमी विस्तार है। यहां समुद्र स्तर से औसत ऊंचाई 3500 मीटर है और इस ऊंचाई के कारण यहां ऑक्सिजन की मात्रा समुद्री तट की तुलना में करीब आधी है; यहां का वातावरण कठिन है और प्राकृतिक सौंदर्य अभूतपूर्व। हिमालय और काराकोराम पर्वत शृंखलाओं के बीच प्राचीन सिंधु घाटी और ज़ांस्कर नदी की निर्मम सुंदरता सारे विश्व के साहसिक पर्यटकों को यहां चुंबक की भांति आकर्षित करती है।

इसी सौंदर्य का मैं भी कायल हो गया पहली बार 2004 में 'ज़ांस्कर' नदी पर एक अंतरराष्ट्रीय रैफ्टिंग अभियान का हिस्सा बनने का मौका मिला। इस अभियान को 'नैशनल जियोग्राफिक' चैनल द्वारा फिल्माया गया और इन रचनात्मक व्यक्तियों के सान्निध्य में प्रकृति के सौंदर्य का भरपूर रसपान किया। फिर 2007 में सिंधु नदी पर एक रैफ्टिंग खोजी टोह अभियान में हिस्सा लिया। इस अभियान की दुर्गमता आज भी रातों की निद्रा भंग कर देती है। इस अभियान में हमने एक प्यारे दोस्त और युवा सह अभियानी को नदी की निर्दयी गोद में खोया है। आजकल इस नदी में रैफ्टिंग करने पर प्रतिबंध है। 2013 में लद्दाख की चुंबकीय आकर्षण ने मुझे फिर से अपनी ओर आकृष्ट किया और मैं 6153 मीटर ऊंचाई वाले 'स्टोक कांगड़ी' नामक पर्वत की चोटी पर पर्वतारोहण अभियान में शामिल हो गया। शारीरिक शक्ति और सहनशीलता के अभाव से मैं उस पर्वत की चोटी को स्पर्श नहीं कर पाया और 5500 मीटर की ऊंचाई से वापस लौट गया। लेकिन खुश हूं कि ज़िंदा हूं, फिर कोशिश करने के लिए।

वर्ष 2017 जुलाई के महीने में हमने लद्दाख को एक अलग अंदाज़ में देखने का निश्चय किया। इच्छा यह थी कि हिमालय प्रदेश के मनाली शहर से लद्दाख क्षेत्र के लेह शहर तक करीब 475 कि.मी. की साईकल की सवारी की जाए। इसके बाद लेह शहर से विश्व की सबसे ऊंची, 5359 मीटर ऊंचाई पर स्थित, मोटर योग्य पास 'खरडुंगला' की चढ़ाई की जाए। अंतरात्मा की इस धुंआधार चाहत को बुद्धि और व्यावहारिकता की फटकार मिली। अपने उदर की बढ़ती परिधि को देख हमने अपने सपनों की पतंग की उड़ान पर लगाम लगाया और यह तय किया कि दिल्ली से लेह, खारदूंगला, नुबरा घाटी और पैन्गांग से वापस दिल्ली की सैर बुलेट मोटर साइकल पर की जाए।

इस योजना को रूप देने के लिए हमने अपने पुराने मित्र श्री टोनी उर्फ राजेश त्रेहन को याद किया। टोनी जी खुद एक जांबाज़ मोटर साईकल चालक हैं और दिल्ली के करोलबाग में Royal Enfield - Bullet ब्रांड मोटर साईकल के डीलर हैं। टोनी जी से मेरे संबंध 2007 में बने थे जब मैंने पहली बार टोनी जी से भाड़े पर ली हुई बुलेट लेकर 15 दिनों की एकल सवारी की थी और दिल्ली से उत्तराखंड के कुमायूं क्षेत्र का भ्रमण किया था। उसके बाद फिर 2010 और 2011 में हमने टोनी जी के बुलेट पर एकल सवारी करते हुए उत्तराखंड एवं हिमाचल के रास्तों को अपना घर बनाया था। इन्हीं यादों को स्मरण करते हुए हमने टोनी जी को फोन लगाया और अपनी नई चाहत का इज़हार किया।

टोनी बाईक सेंटर हर साल दिल्ली-लेह-दिल्ली बाइक अभियान का आयोजन करता है। टोनी जी के प्रस्ताव से मैंने इस अभियान में शामिल होने का निर्णय लिया। मैंने अपने स्कूली

जीवन के दो प्रिय मित्र आलोक और अखिल को भी इस कार्यक्रम में शामिल होने की प्रेरणा दी।

20 जुलाई, 2017 को हम सब भारत के विभिन्न हिस्सों से दिल्ली पहुंचे और टोनी बाईक सेंटर द्वारा बुक किए गए पहाड़गंज स्थित एक होटल में मिले। वहां से हम टोनी बाइक सेंटर के करोलबाग स्थित कार्यालय गए और अभियान संबंधित कागज़ात तथा हिसाब किताब का निपटारा किया। हमने अपनी बाईक का चयन किया और साथ ही हेलमेट, घुटने की गद्दी, कोहनी की गद्दी, मोटर ऑयल, टारपोलिन, दस्ताने, पिंडली की गद्दी, जेरी कैन इत्यादि ज़रूरत के सामान लेकर होटल पहुंचे।

शाम को अभियान संबंधी बैठक हुई, यहां हम अपने सह अभियानकारी तथा अभियान प्रबंधक से मिले जिन्होंने हमें इस अभियान के नियमों से अवगत कराया। उस रात हमने अपनी पैकिंग अंतिम रूप से की और रात को जल्दी ही सो गए क्योंकि अगले दिन सुबह 6 बजे रवानगी तय थी।

21 जुलाई, 2017 को सुबह 6.00 बजे हमारी टीम दिल्ली के इंडिया गेट से फ्लैग ऑफ हुई और कुछ ही मिनटों में हम दिल्ली- चंडीगढ़ राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 1 पर हवा से बातें करने लगे। इस अभियान में मैंने 500 CC बुलेट ले रखी थी और देखते ही देखते यह सवारी मेरे शरीर का एक अनदेखा अंग जैसा बन गया और इसकी मदमस्त धड़कन मेरी धड़कन बन गई। बुलेट का रोमांच और धड़कन एक अजीब उत्साह का संचार करता है। देखते ही देखते पूरे टीम से दोस्ती हुई और हमारे मोटर बाईक अभियान का सही आग़ाज़ हुआ। हमारी टीम के अभियान नेता श्रीमती माला त्रेहन जी थी, जो टोनी जी की पत्नी और सहभागी हैं। माला जी हमें अपने Support Vehicle से बैकअप कर रही थी। इस यान में टोनी बाईक सेंटर के सहायक प्रबंधक मुकेश जी, एक बाईक मेकानिक 'कप्तान' जी, और एक चालक था। हमारी टीम के राईडिंग लीडर देविंदर जी थे, जोकि एक पेशेवर टैक्स कन्सल्टेंट और एक जांबाज़ राईडर हैं। हमारे अभियान दल में एक स्विज़ दंपति, दो भारतीय जोड़े और 06 अन्य पुरुषों को मिलाकर कुल 13 राईडर और 04 सपोर्ट स्टाफ थे।

पहली रात हम चंडीगढ़ शहर से 10-15 कि.मी. पूर्व, डेरा बस्सी नामक एक जगह पर होटल में रुके। कार्यक्रम के हिसाब से अगले दिन सुबह 5 बजे की रवानगी थी इसलिए 4.30 बजे से ही अपने सामान मोटर साईकल पर बांधने का काम शुरू करना था। सुबह उठ कर नीचे आया, तो घमासान बारिश हो रही थी। हमने मन ही मन इंद्रदेव का नमन किया और उनसे हमारे कार्यक्रम में बाधा न डालने की गुहार लगाई। कुछ ही देर में इंद्रदेव की कृपा हुई और हम पैंकिंग कर करीब 6 बजे मनाली की ओर रवाना हो गए। चंडीगढ़ से मनाली के रास्ते पर बड़े वाहनों का काफी आवागमन था और साथ ही पहाड़ों के घाटी के रास्ते पर बारिश और कीचड़ के कारण काफी फिसलन हो गई थी। इन स्थितियों में 10-12 घंटे की मशक्कत भरी सवारी करते हुए हम सबको बहुत तकलीफ हुई। 350 कि.मी. की सवारी के बाद शाम को 6.00 बजे हम मनाली के होटल पहूंचे और चैन की सांस ली। रात कुछ मुर्गों ने हमारे लिए अपनी जान की आहुति दी और हमने मदिरा के साथ उनकी आहुति को स्वीकार किया।

अगले दिन हम मनाली से सुबह 7.00 बजे निकले बाईक की टंकियों को भरा और साथ ही 5 लिटर की एक डब्बी रिज़र्व में रखी। मनाली शहर से उत्तर की ओर लोकालय काफी दूर-दूर और विरल है, इसलिए यह एहतियात ज़रूरी है। मनाली से निकलकर हम पहले मरही में रुके यहां सैलानियों की खूब जमघट थी। यहां चाय, बिसकट, इत्यादि सेवन करने के बाद हम रोहतांग पास पहुंचे। रोहतांग 3979 मीटर की ऊंचाई पर स्थित एक बहुत ही खूबसूरत पास है। यहां का नज़ारा देखने हम जैसे समतलवासी सैलानी झुंड में आते हैं और इस जगह की मोहक सुंदरता का आनंद लेते हैं। यहां, हवा काफी तेज़ और ठंडी थी और हमने ज़्यादा वक्त ऐसे माहौल में न गुज़ारने का फैसला किया। रोहतांग पास के बाद का रास्ता बहुत ही खतरनाक और फिसलनभरी उतराई वाला था। इस रास्ते पर थोड़ी सी लापरवाही घातक हो सकती है। रोहतांग से जिसपा के रास्ते में हमारे दो साथियों के साथ हादसा हुआ, उन हादसों से शारीरिक कोई क्षति तो नहीं हुई पर दोनों के हौसले और आत्मविश्वास पर गहरा आघात हुआ और वे दो दिनों के बाद लेह से इस अभियान को छोड़ कर वापस चले गए। इस दिन की रामांचक यात्रा हमें जिसपा नामक एक छोटे से गांव में ले आई। यहां हमारी रहने की व्यवस्था टेंट में थी लेकिन

यह टेंट बहुत शानदार थे। इस टेंट के साथ शौचालय और स्नानघर था तथा रोशनी, बिस्तर, कंबल इत्यादि का भी भरपूर इंतज़ाम था। दिन भर की कमर तोड़ मेहनत के बाद यह सुख हमें खूब रास आया और हम सब 8-8.30 बजे ही नींद की आगोश में खो गए।

अगले दिन फिर सुबह 7 बजे की रवानगी हुई। आज रास्ते में काफी छोटे बड़े नाले आए और इन नालों से गुज़रने का हमने भरपूर मज़ा लिया। नाले के बीच फंसी हुई मोटर साइकलों को धक्का दे कर निकालने का मज़ा ही कुछ और था। आज रास्तों में चलते हुए हमने कुछ सैन्यबल के दस्ते और प्रतिष्ठान देखे। इन दुर्गम घाटियों पर शून्य से नीचे का तापमान झेलते हुए ये वीर हमारी सुरक्षा के लिए अपना सुख, प्रेम सब त्याग कर अपने प्राणें की आहुति देने के लिए तत्पर और तैयार हैं। इनसे परिचय करते और दो बातें करने के बाद हमें ऐसा महसूस हुआ कि उनकी आंखें जैसे कह रही हों:

"गजरे की खुशबू को महकता छोड़ आया हूं,
मेरी नन्हीं सी चिड़िया को चहकता छोड़ आया हूं,
मुझे छाती से अपनी तू लगा लेना ऐ भारत मां,
मैं अपनी मां की बाहों को तरसता छोड़ आया हूं ।"

नम आंखों से अपने सैनिक भाइयों को धन्यवाद की सलामी देकर हम आगे निकल आये।

जिसपा से निकलने के बाद हमने आज कुख्यात बारालच्चा पास (4890 मीटर) की चढ़ाई की। इस चढ़ाई के दौरान हमें अपने बेजान वाहन पर हुए जुल्म पर भी तरस आ गया और हमने यहां रुक कर थोड़ा वक्त बिताया। दोपहर के करीब 2 बजे हम सर्चू (Sarchu) पहुंचे। सर्चू इस रास्ते का एक प्रमुख पड़ाव है, लेह की ओर जाने वाले यात्री यहां रात को रुकते हैं। टेंट आवास का इंतज़ाम है क्योंकि यह जगह साल के 6 महीने 10 फुट बर्फ में ढकी रहती है और केवल जून से अक्तूबर तक इस रास्ते आवागमन होता है। यह 4290 मीटर की ईंचाई पर हिमाचल और लेह की सीमाओं पर स्थित है। हमने अपनी जिंदगी का काफी वक्त हिमालय की कई घाटियों और पर्वत श्रृंखलाओं की पद सैर करते हुए गुज़ारे हैं, लेकिन सर्चू की बर्फीली ठंड और तूफानी हवा मनुष्य के शरीर में सुई की भांति चुभती है और इस जगह की ठंण्ड के प्रकोप को मैं भुला नहीं पाऊंगा।

अगले दिन हम 8 बजे रवाना हुए और बेहतरीन रास्तों और नज़ारों का लुत्फ उठाते हुए मोराई प्लेन्स पहुंचे, यह एक ठंडी मरुभूमि की तरह सपाट स्थल है जिसके बीच रास्ता 50 कि.मी. बिलकुल रूलर की तरह सीधा है। यह एक हाई आल्टिट्यूड रनवे की तरह है। यहां पर हमने अपने मूक वाहनों को खूब दौड़ाया और प्रतिस्पर्धा की। इस जगह के बाद एक और हाई ऑल्टिट्यूड माउंटेन पास- 'तांगलांग ला' की खूबसूरती हमने अपने कैमरों में कैद की। यहां से हम लद्दाख क्षेत्र के सबसे बड़े शहर लेह में पहुंचे और होटल में रुके। लेह के आरामदायक वातावरण ने हमारे शरीर में नई शक्ति डाल दी।

आज हम सबने लेह शहर में ही आराम फरमाया और लेह के मार्केट में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय व्यंजनों का आनंद लिया। आज हमारे दो सह अभियानी हमे छोड़ गये। दिल्ली से लेह के सफर ने इनके धैर्य और मनोबल की खूब परीक्षा ली थी।

अगले दिन हम करीब 4.00 बजे ही रवाना हो गए और सुबह की पहली किरणों के साथ 5400 मीटर ऊंचाई पर स्थित पृथ्वी की सबसे ऊंची सड़क 'खारडूंग ला' पर अपनी उपस्थिति का ऐलान किया। यहां के सैन्यबल ने सुबह-सुबह भारतीय गौरव का प्रतीक हमारे राष्ट्र ध्वज का आरोहण किया और हमने पूरे जोश के साथ राष्ट्रगान गा कर इस ध्वज का सम्मान किया। खारदुंगला की बर्फीली हवाओं में हमने चाय की चुस्की ली और तत्पश्चात् अपने गंतव्य की ओर अग्रसर हुए। दोपहर के 3 बजे हम 'नुब्रा वैली' नामक एक प्राचीन घाटी में पहुंचे जहां हमारे लिए टैंट में आवास की व्यवस्था थी। लेह से 150 कि.मी. दूरी पर श्योक और सियाचिन नदियों के संगम पर स्थित यह घाटी एक विशाल सपाट घाटी है। यह जगह भी एक पहाड़ी ठंडी मरुभूमि है जिसकी औसत ऊंचाई 3100 मीटर है। शाम को हमने उस जगह के मोहक दृश्य का आनंद लिया। यह जगह डबल हंप ऊंट या बाक्ट्रियन ऊंट के लिए प्रसिद्ध है। ये ऊँटे साइबीरिन प्रजाति की हैं और प्राचीन सिल्क रूट में पड़ने वाले इस रास्ते में अपने पुर्खों की निशानी हैं। हमारे कुछ साथियों ने इन अद्भुत जानवरों पर चढ़ कर सैर किया। मैं और मेरे दोस्त आलोक ने यहां के एक मेले में परंपरागत तीर और कमान से तीरन्दाजी का लुफ्त उठाया।

अगली सुबह इसी रास्ते हम लेह शहर वापस आ गए और रात वहीं गुज़ारी। उसके अगली सुबह हम 4350 मीटर की ऊंचाई पर स्थित 'पैंगोंग त्सो' नामक एक हाई आल्टिट्यूड झील के लिए रवाना हो गए। यह एक खारे पानी की विशाल झील है और इसका 60 प्रतिशत हिस्सा चीन में है। लेह से रवाना होकर 'चांगला पास' नामक दुनिया के द्वितीय सबसे ऊंचे रास्ते पर चढ़ाई की। इसके बाद हम पैंगोग झील की तरफ बढ़े इस झील के नीले रंग, भूरे-लाल पहाड़ और उनके ऊपर फिर नीले आसमान के अद्भुत दृश्य ने दिल को मोह लिया। इस अभूतपूर्व दृश्य को देख

अपने सृष्टा के प्रति प्रेम उमड़ आया था और मन सोचने लगा कि "जिसकी रचना इतनी सुंदर- वो कितना सुंदर होगा।" पैंगोग झील के किनारे हमने टेंट में रात गुज़ारी और अपने सोम रस के साथ झील की 'रात्रि की सुंदरता' का भी रसपान किया।

अगले दिन हम पैंगोंग झील से लेह पहूंचे और लेह में रात बिताने के बाद उसी रास्ते से लौटने की तैयारी की। हम लेह से सर्चू और फिर मनाली पहूंचे जहां हम तीनों दोस्तों ने इस अभियान को अलविदा कहा और वही मोटर साइकल लेकर ऊना-लुधियाना और करनाल होते हुए दिल्ली पहुंचे। 16 दिनों तक पहाड़ों की सुंदर और मोहक वादियों में कुदरत की खूबसूरती निहारते हुए हम में से किसी का मन नहीं भरा था, मानो हमें उन पहाड़ों, वादियों, झीलों से मुहब्बत हो गई हो, किसी प्रेमी जोड़ों के बिछड़ने पर जो दर्द होता है, वैसा ही दर्द हमारे मन में भी होने लगा, फिर मिलने का वादा करके, उन नज़ारों से बड़ी मुश्किल से जुदा होते हुए मानो हम सबके दिल से बस यही गूंज निकल रही थी :

दिलकश है तू, मैकश हूं मैं, तुझसे ना दूर रह पाऊंगा मैं
तेरी मदमस्त शोखियों को बेताबी से पिए जाऊंगा मैं
रुखसत होने का गम ना कर, तुझसे फिर मिलने आऊंगा मैं
अपने इकरार-ए-मुहब्बत पर तेरा दस्तखत लेने आऊँगा मैं।

अनंत सुवास

सिध्या श्रीधर

उसमें सुवास है, स्वर्गीय सुवास
ज़मीन पर लेटे हुए मैं उस सुवास को देख सकती हूं

सुवास कैसे देखा जा सकता है?
हां, देखा जा सकता है, मैं देख सकती हूं
स्वर्गीय सुरभि का सुवास
इससे मेरे पीडित हृदय को सुकून मिलता है
यह मेरी मांस-पेशियों में गहरे उतरता है
यह अंतरमन की खुशियां और
नश्वर अंगों को बाहर ला रहा है
और अंत में,
दैवीयता का असली भाव उतरता है,
और कहीं नहीं,
मेरी खून की हरेक बूंद में और वह मेरे प्राण ले जाता है
मेरी खून की बूंदों में, खून की काली बूंदों में
तब महकने लगता है सच्चा अनंत सुवास

=====

देश के प्रति मेरा कर्त्तव्य

मनोज कुमार
सीमाशुल्क अधीक्षक (निवारक),

"मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ पर जायें वीर अनेक "

ये पंक्तियाँ माखनलाल चतुर्वेदी की *"पुष्प की अभिलाषा "* शीर्षक कविता से ली गई है जो कि किसी भी सच्चे देशप्रेमी भारतीय के दिल की अभिलाषा हो सकती है, लेकिन क्या केवल सीमा पर जान देना या *"भारत माता की जय "* का नारा लगाना ही देशभक्ति है या देशभक्ति के कुछ और भी मायने हैं या यों कहें कि देश के प्रति हमारे कुछ और भी कर्त्तव्य हैं, यह एक विचारणीय प्रश्न है।

कर्त्तव्य किसी भी व्यक्ति के लिए नैतिक या वैधानिक ज़िम्मेदारी है जिनका पालन सभी को अपने देश के लिए करना चाहिए। राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों का पालन करना राष्ट्र के प्रति हमारे सम्मान को दर्शाता है।

संविधान के भाग 3 में अनुच्छेद 51क के अनुसार भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होगा कि वह:

1. *संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गान का आदर करें।*
2. *स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करें।*
3. *भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखें।*

4. *देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।*
5. *भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग आधारित सभी भेदभाव से परे हों, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध हैं।*
6. *हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझें और उसका परिरक्षण करें।*
7. *प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत, वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखें।*
8. *वैज्ञानिक दृष्टिकोण मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।*
9. *सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें।*
10. *व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाईयों को छू ले।*
11. *6 से 14 वर्ष तक की उम्र के बीच अपने बच्चों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना।*

संविधान में बताये गये इन वैधानिक कर्त्तव्यों के अलावा भी हर व्यक्ति के कुछ और भी नैतिक कर्त्तव्य हैं। **"कर्म ही पूजा है"** को अमलीजामा पहनाते हुए हम चाहें सरकारी सेवक हों, विद्यार्थी हों, किसान हों, मजदूर हों या बड़े व्यवसायी हों, अपना काम ईमानदारी से करना चाहिए। जब भी हमें हमारे काम के दौरान कुछ संशय लगे तो **गांधीजी का जंतर** हमें याद रखना चाहिए जिसमें उन्होंने कहा है- "*जब भी तुम्हें सन्देह हों या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ : जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी सूरत याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर*

रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा ? क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा यानि क्या उससे करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखें हैं और आत्मा अतृप्त है? तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।"

हमें भाग्यवादी नहीं, बल्कि कर्मवादी होना चाहिए। क्योंकि भाग्यवाद अकर्मण्यता को बढ़ावा देता है। मनुष्य का भाग्य उसके हाथ की रेखाओं में नहीं, बल्कि उसकी मुट्ठी में होता है। वह अपने कर्म से अपना और अपने देश का भाग्य बदल सकता है। पूर्व

प्रधानमंत्री लालबहादुरशास्त्री, पूर्व राष्ट्रपति श्री ए पी जे अब्दुल कलाम, वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी इत्यादि कई उदाहरण हमारे सामने उपलब्ध हैं। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने क्या खूब लिखा है-

"भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का "

अपने सामर्थ्य और बुद्धि के आधार पर दूसरों के जीवन को प्रकाशमय बनाना मनुष्य का धर्म है। केवल अपने बारे में सोचना और जीना पशु का लक्षण है। मनुष्य को चाहिए कि वह

दूसरों के काम आये और धरती पर फैले अंधकार को मिटा दे। रामधारी सिंह ' दिनकर ' के शब्दों में-

"दीपक का निर्वाण बड़ा कुछ
श्रेय नहीं जीवन का
है सद्धर्म दीप्त रख उसको
हरना तिमिर भुवन को "

भाषा व्यक्ति को जोड़ती है, व्यक्ति को जोड़ने से परिवार बनता है, परिवार को जोड़ने से समाज, समाज से गॉव, गॉव से शहर, शहर से महानगर एवं महानगर से देश एवं देश के विकास में जुड़ाव का होना बहुत आवश्यक है। खासतौर से यह जुड़ाव हिंदी भाषा के माध्यम से ही हो सकता है क्योंकि यह देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है जब तक इसका विकास नहीं होगा देश के अखंडता में बाधक रहेगा। लेकिन साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि भारत बहु भाषाभाषी देश है। हमें हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए क्योंकि कोई भी भाषा वहां की संस्कृति से जुड़ी होती है एवं भाषा के नाम पर किसी भी प्रकार की कलह पैदा नहीं होनी चाहिए। हिन्दी समन्वय की भाषा है और इसका किसी भी भाषा से कोई विरोध नहीं है। यह बात सही है कि अंग्रेजी आज की ज़रूरत है लेकिन क्या ज़रूरत के लिए नींव को छोड़ा जा सकता है। अगर हिन्दी को इस तरह से पृथक कर दिया जायेगा तो गॉव एवं शहरों में बढ़ता मतभेद और गहरा होता जायेगा।

" अच्छा है बहुभाषा का ज्ञान, इससे बनते हैं सब महान ।
सीखो जी भर के भाषा अनेक, पर राष्ट्रभाषा न भूलो एक।।"

हमारी संस्कृति में ***"अतिथि देवो भव: "*** की बात कही गई है। हमें इसका पालन करते हुए जब भी कोई विदेशी या दूसरे राज्य का व्यक्ति हमारे देश/राज्य में आता है तो हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए जिससे कि हमारे देश/राज्य की छवि खराब हो। ज्ञातव्य हो कि पर्यटन का किसी भी देश/राज्य की अर्थव्यवस्था के विकास में म

ह ती भूमिका होती है।

हर काम सरकार के भरोसे नहीं छोड़ी जा सकती। जब तक जनता की भागीदारी नहीं होगी तबतक सरकार की कोई योजना पूरी तरह से सफल नहीं हो सकती है। हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम अपने कार्यालयों में, घर में या कहीं भी बिजली की बर्बादी न करें और ना करने दें क्योंकि बिजली बचाना बिजली उत्पादन करने के बराबर है *(saving electricity is equal to producing electricity)*। यथासंभव सार्वजनिक वाहन का प्रयोग करें या यदि संभव न हो तो गाड़ी साझा (pool) करें क्योंकि व्यक्तिगत वाहनों के उपयोग से प्रदूषण, सड़क जाम, दुर्घटनायें इत्यादि होती हैं। हमें हमें आसपास गंदगी ना फैलाकर स्वच्छ भारत बनाने में सरकार का सहयोग करना चाहिए एवं ये कभी नहीं सोचना चाहिए कि सफाई करना सरकार का काम है। हमें पुलिस और प्रशासन की ऑख और कान बन कर रहना चाहिए एवं किसी भी अप्रत्याशित घटना की जानकारी तुरंत पुलिस को देनी चाहिए। भूल से भी कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए एवं कानून का काम कानून को करने देना चाहिए तथा अराजकता (anarchy) न फैलाकर विधि-व्यवस्था (law and order) बनाये रखने में सरकार का सहयोग करते रहना चाहिए।

हर व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह अपनी मातृभूमि से अगाध प्रेम करे और इसके लिए अपनी जान कुर्बान करने के लिए तैयार रहना रहे। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के शब्दों में:

"आहुति बाकी यज्ञ अधूरा,
अपनों के विघ्नों ने घेरा,
अंतिम जय का वज्र बनाने,
नव दधीचि हड्डियां गलायें
आओं फिर से दिया जलायें
एक नया स्वच्छ भारत बनायें।"

पुन: अटल जी के ही शब्दों में-

"भारत जमीन का टुकड़ा नहीं,

जीता जागता राष्ट्रपुरूष है।
. . . . . .
यह वन्दन की भूमि है, यह
अभिनन्दन की भूमि है
यह तर्पण की भूमि है, यह
अर्पण की भूमि है
इसका कंकर-कंकर शंकर है,
इसका बिंदु-बिंदु गंगाजल है
हम जियेंगे तो इसके लिये, मरेंगे तो इसके लिए। "

--जय हिंद--

******

MY MUMMY IS THE BEST
I always Be happy
Love my life
ME
LOL
International Customs
25th January 2018
CUSTOM HOUSE, COCHIN & CUSTOMS COMMISSIONERATE